Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

रावजोधा की प्रमुख उपलब्धियाँ

डॉ. सुमित मेहता*

* सहायक आचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर (राज.) भारत

प्रस्तावना – राजस्थान के इतिहासमें ही नहीं अपितु भारतीय इतिहास में भी जोधपुर राज्य का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। अपनी वीरता, शौर्य, स्वामिभक्ति और बलिदान के लिए विख्यात जोधपुर ने राजस्थान के इतिहास को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया है। जोधपुर के राठौड़ नरेशों ने अपने शौर्य और बलिदान से पश्चिमी राजस्थान में अपनी सीमा का निरन्तर विस्तार किया। प्रारम्भिक राठौड़ इतिहास में लगभग सभी शासकों को युद्ध में अपनी जान गवानी पड़ी। राव जोधा द्धारा जोधपुर दुर्ग की स्थापना किये जाने के पश्चात् राठौड़ों को एक सुरक्षित स्थान मिल गया।

राव जोधा को ही राठौड़ साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक एवं राठौड़ साम्राज्य को निश्चित स्वरूप प्रदान करने वाला माना जाता है।(1)महाराणा मोकल की हत्या के पश्चात् राव जोधा के पिता राव रणमल ने चित्तौड़ को ही अपना निवास स्थान बनाया था। अनेकों शत्रुओं से घिरे होने एवं अल्पव्यस्क होने के कारण(2) मेवाड़ के महाराणा कुम्भा ने भी मारवाड़ की प्रशासनिक व्यवस्था की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। राव रणमल का पुत्र जोधा भी चित्तौड़ दुर्ग की तलहटी के महलों में रहता था।(3)राव रणमल की हत्या के बाद राव जोधा के सम्मुख अनेकों कठिनाईयां थी। मारवाड़ के सभी प्रदेशों पर अलग-अलग वंशज शासन कर रहे थे। सीवाना पर जैतमालोत, नागौर पर खानजादा, जैतारण पर सिंधल राठौड़ आदि।

राव रणमल की मृत्यु की सूचना प्राप्त होते ही राव जोधा लगभग 700 साथियों(4)के साथ मंडौर की ओर रवाना हो गये। रेउजी के अनुसार जोधा की सेना की प्रथम मुठभेड़ चित्तौड़ के रावत चूंडा की सेना से हुई, जो पहले से ही उनका पीछा कर रही थी। ओझाजी के मतानुसार प्रथम युद्ध कपासन नामक स्थान पर हुआ। रावत चूंडा के पास अत्यधिक सैनिक थे एवं इस युद्ध में जोधा के लगभग 200 सैनिक वीरगति को प्राप्त हो गये। अत: जोधा की सेना अवसर पाकर युद्धभूमि से निकल गई।

मार्ग में जोधा की सेना ने अनेकों युद्धों का सामना किया। अत: सोमेश्वर पँहुचतें-पँहुचतें उसके पास केवल 250 सैनिक ही बचे।(5) जिनका उद्देश्य राव जोधा को सकुशल मंडोर तक पंहुचाना था। सोमेश्वर में पीछा करती हुई मेवाड़ की सेना के साथ जोधा की सेना का भीषण युद्ध हुआ। इस युद्ध में जोधा के लगभग सभी सैनिक मारे गये(6)किन्तु जोधा को सकुशल मंडौर पंहुचा दिया गया। जोधा के चचेरे भाई बरजांग भींवोत को बंदी बना लिया गया।

मंडोर में भी सुरक्षित महसूस न करने के कारण जोधा जांगलू की तरफ निकल गये तथा वहां पर काहुनी नामक गाँव में ठहरे। चित्तौड़ की सेना ने मंडोर पर अपना अधिकार कर लिया।राव जोधा की सूचना प्राप्त होते ही मेवाड़ की सेना ने काहूनी पर आक्रमण कर दिया। अत: जोधा को काहुनी से भी भागना पड़ा। इसके बाद जोधा इधर-उधर भटकता रहा और धीरे-धीरे उसने अपनी सैनिक शक्ति में वृद्धि कर ली।

जोधा का चचेरा भाई बरजांग, जो कि मेवाड़ की कैद में था, कैद से निकल भागा। उसने गागरोन के स्वामी खीचीं-चौहान चाचिगदेव की कन्या से विवाह कर लिया और यहां से पर्याप्त आर्थिक और सैनिक सहायता प्राप्त कर जोधा के पास पँहुचा। पर्याप्त सैन्य बल हो जाने के उपरान्त भी राव जोधा के पास सैन्य बल का अभाव था। अत: राव जोधा ने,सेतरावा के रावत लूणा जिनके पास पर्याप्त घोडे थे, से सहायता मांगी। रावत लूणा की पत्नी जोधा की मौसी थी। रावत लूणा ने तो घोडे देने से इन्कार कर दिया। किन्तु अपनी मौसी के सहयोग से उसको 140 घोडों की सहायता प्राप्त हो गई। पर्याप्त सैन्य बल इकट्ठा होने के बाद राव जोधा ने मंडौर पर आक्रमण करने का निश्चय किया। उसने अपने विश्वासपात्र मंगलिया काला को दुर्ग की स्थिति का पता लगाने हेतु भेजा एवं स्वयं मंडौर से थोडी दूरी पर अपनी सेना सहित रूक गया। मंगलिया से दुर्ग की स्थिति का पता लगा जोधा ने अर्धरात्रि में दुर्ग पर आक्रमण कर दिया। मेवाड़ी सेना के प्रमुख योद्धा मारे गये और मंडोर दुर्ग पर राव जोधा का अधिकार हो गया।(7) इस तरह से राव जोधा ने मंडोर में अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली। उसके बाद जोधा ने मारवाड़ में स्थापित मेवाड़ की अन्य सैनिक चौकियों पर भी आक्रमण कर दिये। सबसे पहले जोधा ने चौकडी पर आक्रमण किया। जहां पर मेवाड़ के राणा की ओर से जोधा का चचेरा भाई राघवदेव सहसमलोत को नियुक्त किया हुआ था। युद्ध के बाद राघवदेव भाग खड़ा हुआ और चौकड़ी पर जोधा का अधिकार हो गया। उसके बाद उसने कोसाना पर अधिकार किया और सोजत के निकट धणला गांव में मेवाड़ी सेना को पराजित किया। इस तरह से राव जोधा ने मारवाड़ को मेवाड़ी आधिपत्य से मुक्त करवाया।

मंडोर पर आधिपत्य के बाद राव जोधा ने महाराणा कुंभा से अपने पिता की हत्या का बदला लेने की योजना बनाई। इधर महाराणा कुंभा भी मारवाड़ में मेवाडी सेना के परास्त होने एवं अपने कई योद्धाओं एवं सामतों के मारे जाने के कारण क्रुद्ध था। रावत चूंडा भी राव जोधा का प्रबल विरोधी था। जोधा की एक विशाल सेना मारवाड़ पर आक्रमण के उद्देश्य से पाली की तरफ रवाना हुई। अश्वों का अभाव होने के कारण मारवाड़ी सेना बैलगाडियों में सवार होकर ही युद्ध के लिए निकल गई।उधर मेवाड़ की भी एक विशाल सेना मारवाड़ की ओर रवाना हुई। किन्तु जब यह ज्ञात हुआ कि जोधा की

सेना बैलगाड़ियों में आ रही है और वे युद्ध से कदापि पीछे नहीं हटेगें तो मेवाड़ी सेना में आतंक छा गया और वह बिना युद्ध किये ही पाली से वापस लौट गई।

इससे राव जोधा की सेना बहुत ही ज्यादा उत्साहित हो गई और उन्होनें मेवाड़ी भूमि में प्रवेश कर चित्तौड़ दुर्ग के द्वार जला दिये। चित्तौड़ आक्रमण से लौटते समय सेना मेवाड़ के सेठ पदमचंद को बंदी बना लाई। यह सेठ बहुत सारा धन भेंट कर कैद से मुक्त हुआ। सेठ के धन से मेहरानगढ़ किले के निर्माण में भी सहायता मिली। किले के पास सेठ की स्मृति में पदमसागर तालाब बनवाया गया।

सांखला नापा के कहने पर महाराणा कुंभा ने भी राव जोधा से विरोध नहीं बढाया। महाराणा ने राजकुमार ऊदा व सांखला नापा को भेजकर राव जोधा से संधि कर ली। संधि की शर्त के अनुसार आंवले के पेड़ों वाली भूमि महाराणा के और बबूल के पेडों वाली भूमि राव जोधा के अधिकार मे रहेगी।(8)1458 ई. में मंडोर के किले में राव जोधा का राज्याभिषेक हुआ। राव जोधा के नाम पर मंडोर के पास ही जोधेलाव तालाब का निर्माण करवाया गया।(9)1459 में राव जोधा ने एक पहाड़ी पर सुदृढ दुर्ग का निर्माण करवाया। 1516 ई. में राव जोधा ने अपनी माता कोडमदेसर के नाम पर एक तालाब का निर्माण करवाया तथा एक कीर्ति स्तम्भ की स्थापना की।

राव जोधा द्वारा जैतारण के सींधलों पर भी आक्रमण किया गया। सींधलों के द्वारा राव जोधा के चचेरे भाई आसकरण सत्तावत की हत्या कर दी गई थी। नरसिंह सींधल जो कि जैतारण का स्वामी थी उसकी मृत्यु होने के पश्चात् उसका पुत्र मेघा वंहा का स्वामी था। राव जोधा ने अपने पुत्र दूदा को जैतारण भेजा। दोनो के बीच में द्वन्द युद्ध हुआ जिसमें मेघा मारा गया।(10)

छापर-द्रोणमुख के मोंहिलों पर हुई विजय राव जोधा की महत्वपूर्ण विजयों में से थी। राव जोधा भी अब नवीन प्रदेशों को विजित करना चाहता था। छापर के स्वामी अजीतसिंह मोहिल, जो कि राव जोधा का संबंधी भी था, ने मारवाड़ में उपद्रव मचा रखे थे। अत: अजीत सिंह व जोधा के बीच गगराणा में भंयकर युद्ध हुआ जिसमें अजीतसिंह मारा गया। कुछ समय पश्चात् जोधा ने छापर के स्वामी बच्छराज, जो कि अजीतसिंह का भतीजा था, पर भी आक्रमण कर दिया। बच्छराज की मृत्यु हो गई और छापर-द्रोणमुख पर जोधा का अधिकार हो गया। जोधा ने वहां बीदा का नियुक्त कर दिया। लोदी वंश के सामंत सारंगखां और राव जोधा के छोटे भाई कांधल के बीच में युद्ध हुआ जिसमें कांधल की मृत्यु हो गई। कांधल की मृत्यु की सूचना जोधा के पुत्र बीका ने राव जोधा को दी। अपने भाई की मृत्यु का बदला लेने के लिए राव जोधा ने बीका की सेना के साथ मिलकर झांसल नामक स्थान पर सारंगखां से युद्ध किया।युद्ध में सांरगखां की मृत्यु हो गई। इस युद्ध के पश्चात् जोधा का साम्राज्य विस्तार हिसार तक हो गया। भारतीय सत्ता में महत्वपूर्ण माने जाने वाले लोदी वंश के सामंत को पराजित करने के बाद जोधा की गणना उत्तरी भारत के महत्वपूर्ण शासकों में होने लगी।

राव जोधा के पुत्र बीका द्वारा ही बीकानेर की स्थापना की गई। राव दूदा और वरसिंग द्वारा मेडते की स्थापना की गई। मारवाड़ में दृढ़ रूप से सामंत प्रथा की स्थापना भी जोधा के शासन काल में ही मानी जाती है। महाराणा कुंभा की हत्या कर ऊदा मेवाड़ का स्वामी बन गया किन्तु राव जोधा के शौर्य और प्रताप को देख उसने राव जोधा को सांभर व अजमेर दे दिये। अत्यन्त प्रतापी होने के साथ जोधा धार्मिक भी थे। उन्होनें गया व प्रयाग की यात्राएं की और गया में लगने वाले करों को समाप्त कराने का प्रयास किया।

उनकी एक रानी हाडी जसमादेवी ने किले पास रानीसर तालाब और दूसरी रानी चांद कुंवरी ने चांद बावड़ी का निर्माण करवाया। राव जोधा को राठौड़ साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना गया। अपने शासन काल में उन्होनें राठौड़ साम्राज्य की सीमाओं में अत्यधिक वृद्धि की। मंडोर राज्य को एक विशाल साम्राज्य में परिवर्तित करने के साथ-साथ मारवाड़ में सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की। 1545 ई को 73 वर्ष की आयु में जोधपुर में राव जोधा का देहान्त हो गया। उनके स्थापित किये हुए साम्राज्य के बल पर ही उनकी पीढ़ियों ने अनेक वर्षों तक शासन किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. दशरथ शर्मा, लेक्चर्स ऑन राजपूत हिस्ट्री एण्ड कल्चर, पृ. 85
2. श्यामलदास, वीर विनोद, भाग-1, पृ. 315
3. मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग-1, पृ. 29
4. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग-1, पृ. 236
5. मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग-1, पृ. 31
6. नैणसी री ख्यात, भाग-2, पृ. 119
7. मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग-1, पृ. 34
8. मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग-1, पृ. 36
9. पं. विश्वेश्वरनाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग-1, पृ. 91
10. नैणसी री ख्यात, भाग-2, पृ. 131-133

****